स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन

राँची विश्वविद्यालय, राँची (झारखंड)

मानविकी संकाय, हिंदी विभाग में पीएच. डी. हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रस्ताव की रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ.सुनीता यादव

प्राध्यापक हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय

राँची (झारखंड)

मो.- +91 9835152016

शोधार्थी

आदर्श कुमार

हिंदी विभाग

राँची विश्वविद्यालय

राँची (झारखंड)

मो.- +91 7979760608

राँची विश्वविदयालय , राँची (झारखण्ड)

2024

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

मनुष्य का विकास कितना खोखला नजर आता है जब युद्ध अपनी विनाश लीला में अगण्य को लील जाता है। मनुष्य अपने ज्ञान, अपनी क्षमता, अपनी तरक्की को संभाल नहीं पाता। वास्तव में यदि मनुष्य को अर्श पर जाना है तो युद्ध की महीन से महीन संभावनाओं का अंत करना होगा अन्यथा युधिष्ठिर की भांति *'दोनों और मेरी ही हार है'* की पीड़ा ही मनुष्य की अर्जित राशि होगी।

युद्ध एक व्यवस्थित और संगठित संघर्ष है जिसमें दो या दो से अधिक पक्ष शामिल होते हैं, जैसे कि देश, समूह, या सेनाएं। युद्ध में हिंसा, विनाश और मृत्यु शामिल हो सकती है, और इसके परिणामस्वरूप अनेक लोगों की मृत्यु, विस्थापन, और आर्थिक विनाश होता है।युद्ध से पीड़ित लोग समाज में आगे जाकर उपेक्षित होते हैं जिनकी पीड़ा कोई भी नहीं समझता है इस संदर्भ में एक लोकोक्ति है –

“जाके पांव ना फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई”

मनुष्य पाशविक वृति से इन्सान अपनी संवेदनाओं के कारण ही बना। संवेदना मनुष्य का प्राकृतिक गुण है जो किसी की पीड़ा देख स्वयं के ह्रदय मे उमड़ जाती है। लेकिन आज युद्ध की विभीषिका व्यक्त करती है कि मनुष्य मनुष्य नहीं निरा पशु है। युद्ध के दौरान मानवीय संवेदनाएं कुंठित हो जाती है जिससे मानवीय संवेदनाओं का हनन होता है। मानवीय संवेदनाएं हमें एक दूसरे के प्रति सुहानुभूति और करुणा की भावना विकसित करने में मदद करती है।

युद्ध की विभीषिका और उससे उपजी मानवीय संवेदनाओं को अनेक रचनाकारों ने अपने साहित्य में जगह दी है। युद्ध की विभीषिका से आशय है युद्ध के परिणाम स्वरुप होने वाली तबाही, संघर्ष,मानवता के लिए उत्पन्न संकट और मानवीय पीड़ा। युद्ध की विभीषिका न केवल सैन्य संघर्ष की तबाही को दर्शाता है बल्कि इसकी सामाजिक आर्थिक और मानसिक प्रभावों को भी उजागर करता है। युद्ध की विभीषिका में विस्थापन और बुनियादी आवश्यकताओं की कमी जैसे पहलुओं का समावेश होता है जो मानव जीवन को गंभीर रूप से प्रभावित करते हैं।

साहित्य की उपन्यास विधा में युद्ध और युद्ध से जुड़ी चीजों का वर्णन विस्तृत रूप से हमारे सामने आता है। युद्ध मूलतः राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के कारण होता है लेकिन युद्ध का तत्काल घातक प्रभाव सामाजिक जीवन में सबसे अधिक पड़ता है। युद्ध के दौरान सैनिक तो सीमा पर लड़ते हैं किंतु आंतरिक भागों में दहशत और महंगाई अपनी चरम सीमा तक पहुंच जाती है। नरेंद्र कोहली कृत 'अभ्युदय' उपन्यास का चौथा खंड 'युद्ध' शीर्षक से है जो हमारे सामने प्राचीन युद्धों को नवीन रूप में प्रस्तुत करता है। युद्ध की विभीषिका में जनधन दोनों की हानि होती है। युद्ध उपन्यास में वर्णित राम रावण

युद्ध प्रसंग का यह दृश्य वर्तमान समय की युद्ध की विभीषिका से होने वाली क्षति के दृश्य को बयां करता है-

"घर-घर में विलाप हो रहा था। कुछ घरों में युवक मारे जा चुके थे,कुछ परिवारों के घायल पड़े हुए थे और कुछ के आज लड़ने जा रहे थे जो मृत समान ही समझे जा रहे थे। लोग रावण और उसके राज्य को कोस रहे थे।"

युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन मानवीय संवेदनाओं और अनुभवों का विश्लेषण करता है । मानवीय संवेदना से आशय है वह भावनात्मक और नैतिक प्रतिक्रिया जो किसी अन्य व्यक्ति की पीड़ा, खुशी या अनुभव के प्रति उत्पन्न होती है। यह संवेदनशीलता सहानुभूति करुणा और सहयोग का प्रतीक है। मानवीय संवेदना हमें दूसरों के दुख दर्द को समझने और उन्हें सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे समाज में एकजुटता और सहानुभूति का भाव बढ़ता है।

जगदीश चंद्र का उपन्यास 'टुंडा लाट' की कथा युद्ध की विभीषिका के संवेदनात्मक पहलू को दर्शाती है ,जिसमें कैप्टन सुनील की संगीत सीखने की उत्कंठा उसे एक अलग धरातल पर पहुँचा जाती है। देश सेवा के लिए दी गई कुर्बानी उसके निजी जीवन के लिए संघर्ष बन जाती है। यह उपन्यास सैनिक जीवन की विडंबनाओ और विसंगतियों का दस्तावेज है।

गरिमा श्रीवास्तव का 'आउशवित्ज : एक प्रेम कथा' उपन्यास में लेखिका ने आउशवित्ज के हवाले से नात्सी यातना, शिविरों और यूरोप के युद्ध कैंप में होने वाले

नृशंस नरसंहारों और दुर्दांत घटनाओं की सूचनाओं को अनुभूति बनाकर पेश करती है। उपन्यास के दो केंद्र हैं - आउशवित्ज और बांग्लादेश। उपन्यास एक तरफ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यूरोपीय यहूदियों की त्रासदी से जुड़ता है तो दूसरी तरफ बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम से। इन दोनों युद्धों की परिस्थितियों, समय और मुद्दे अलग-अलग है लेकिन आम जन और खासकर स्त्री की त्रासदी एक जैसी है।

हाल के समय में अजय शर्मा द्वारा रचित खारकीव के खंडहर उपन्यास में रूस और यूक्रेन युद्ध की विभीषिका का वर्णन किया गया है। अब युद्ध केवल उन देशों तक सीमित नहीं रहा जिनके बीच यह हो रहा है बल्कि यह पूरे विश्व पर अपना प्रभाव दिखाती है।

साहित्य संवेदनाओं से परिपूर्ण होता है। प्रस्तुत शोध विषय "स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन" पर शोध करना मानव की मरती संवेदना को जागृत करने जैसा है। साहित्य में सामर्थ्य है अकरुण को करुणा प्रदान करने की। मरती संवेदना श्रृष्टि का काल है जिसमें जाकर कोई नहीं बचता। आज आवश्यकता है अपने संवेदनाओं को उजाकर करने की, अपने को मनुष्य बनाए रखने की, पीड़ित जनों की मदद और उन्हे पीड़ा से बाहर लेने की।

साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा / अद्यतन स्थिति

शोध कार्य हेतु हिंदी उपन्यास पर मेरे द्वारा चयनित विषय *“स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन”* पर शोध-कार्य नहीं हुआ

है | हालांकि कुछ शोध-कार्य जो इस विषय से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित हो सकते हैं ,जिसकी सूची निम्नांकित है-

- हिंदी काव्य में युद्ध वर्णन;मदन लाल वर्मा;कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय; कुरुक्षेत्र 1970
- हिंदी काव्य में युद्ध वर्णन ; उषा गुप्ता; पंजाब विश्वविद्यालय ; पंजाब 1975
- आधुनिक हिंदी कविता में युद्ध का चित्रण और शांति की परिकल्पना ; प्रमिला;कन्नूर विश्वविद्यालय 2016

उपर्युक्त शोध कार्य से स्पष्ट है कि अभी तक के कार्य में युद्ध के वर्णन संबंधी अध्ययन को ही वरीयता दी गई है ,ऐसे युद्ध की विभीषिका और मानवीय संवेदना पर मेरा शोध मौलिक होगा।

शोध उद्देश्य

इस शोध के प्राथमिक उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- युद्ध के कारणों की पहचान : युद्ध के कारणों को समझने के लिए शोध करना आवश्यक है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।
- युद्ध के अनुभव ने हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक मूल्यों पर क्या प्रभाव डाला है।
- हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका के माध्यम से मानवाधिकारों के उल्लंघन और नैतिकता के सवालों को किस प्रकार उठाया गया है।

- किस हद तक हिंदी उपन्यासकार युद्ध की विभीषिका को मानवीय पीड़ा और संवेदनाओं के संदर्भ में एक सार्वभौमिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

शोध प्रश्न एवं परिकल्पना

1. किस प्रकार से स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध के दृश्य केवल भौतिक विभीषिका न होकर मानसिक और भावनात्मक विभीषिका का भी चित्रण करते हैं?
2. युद्ध की विभीषिका को हिंदी उपन्यासकार किस प्रकार व्यक्त करते हैं, और इसके माध्यम से वे कौन-सी सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों को उजागर करते हैं?
3. हिंदी उपन्यासों में युद्ध से प्रभावित पात्रों के माध्यम से मानवीय संवेदनाओं को किस प्रकार चित्रित किया गया है?
4. युद्ध के दौरान और बाद में समाज और व्यक्तियों के मानसिक और भावनात्मक संघर्षों का उपन्यासों में क्या रूप देखने को मिलता है?
5. युद्ध के समय उत्पन्न मानवीय संवेदनाओं का हिंदी उपन्यासों में किस प्रकार विकास किया गया है? क्या ये संवेदनाएँ मानवता के प्रति सहानुभूति प्रकट करती हैं?

शोध सीमाएं / सीमांकन

शोध-कार्य की सीमाओं का निर्धारण शोध प्रारूप का महत्वपूर्ण अंग है| किसी भी शोध-कार्य में सूक्ष्म एवं गहन अध्ययन करने के लिए अथवा शोध विषय को सुचारू रूप से संपन्न करने के लिए उसका सुनियोजित होना अनिवार्य होता है|

- अध्ययन मुख्य रूप से स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों पर केंद्रित है|
- शोध व्यावहारिक बाधाओं के कारण विशिष्ट हिंदी उपन्यासों के चयन के लिए खुद को सीमित करता है। संभवत: इस भाषा की संपूर्ण साहित्यिक कृतियाँ शामिल ना हों, संभावित रूप से प्रभावशाली उपन्यासों को छोड़कर।
- शोध में मुख्य रूप से समकालीन और स्वतंत्रता के बाद की अवधि पर जोर रहेगा।

शोध प्रविधि

"स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में युद्ध की विभीषिका का संवेदनात्मक अध्ययन" विषयक प्रस्तावित शोध-विषय की शोध पद्धति सर्वेक्षनात्मक,वर्णनात्मक ,विश्लेषणात्मक,तुलनात्मक व आगमनात्मक और निगमनात्मक होगी| शोध में वैज्ञानिक विश्लेषण पर जोर दिया जायेगा | आवश्यकतानुरूप विभागीय एवं केंद्रीय पुस्तकालयों की सहायता ली जाएगी | शोध-कार्य में क्रियान्वयन हेतु सम्बन्धित मूल ग्रन्थ तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि का उपयोग किया जायेगा|

महत्व / प्रस्तुत शोध का अपेक्षित योगदान

- शोध-कार्य ज्ञान के विविध पक्षों में गहनता और सूक्ष्मता लाना है,इस दृष्टिकोण से मेरा शोध कार्य महत्वपूर्ण है|

- शोध-कार्य ज्ञान के भंडार को विकसित और परिमार्जित करता है| हमें विश्वास है कि प्रस्तावित शोध कार्य से भी ज्ञान-भण्डार का विकास होगा साथ ही एक नई शोध दृष्टि विकसित होगी|
- शोध-कार्य से व्यक्ति का व्यक्तिगत और बौधिक विकास होता है और मुझे विश्वास है कि प्रस्तावित शोध-कार्य से भी ऐसा होगा|
- शोध-कार्य में प्रासंगिक तथ्यों का संकलन इसकी विश्वसनीयता को अर्जित करेगा|
- शोध का विषय समय और परिस्थिति के अनुकूल है जिससे शोध की सार्थकता और उपादेयता सिद्ध होगी|

संभावित अध्यायीकरण

- **प्रथम अध्याय : युद्ध और संवेदना**
  - 1.1 युद्ध की अवधारणा
  - 1.2 युद्ध का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन
  - 1.3 संवेदना की अवधारणा
  - 1.4 मानवीय संवेदना का महत्व
- **द्वितीय अध्याय : युद्ध आधारित हिंदी उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय**
  - 2.1 स्वतंत्रता से पूर्व युद्ध आधारित हिंदी उपन्यासों का परिचय
  - 2.2 स्वातंत्र्योत्तर युद्ध आधारित हिंदी उपन्यासों का परिचय
- **तृतीय अध्याय : उपन्यास में युद्ध पूर्व परिस्थतियों का वर्णन**
  - 3.1 समाजिक परिस्थतियों का अध्ययन
  - 3.2 राजनीतिक परिस्थतियों का अध्ययन
  - 3.3 आर्थिक परिस्थतियों का अध्ययन

3.4 धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का अध्ययन

- चतुर्थ अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर युद्ध आधारित हिंदी उपन्यासों में युद्ध का प्रभाव

4.1 सामाजिक प्रभाव

4.2 राजनीतिक प्रभाव

4.3 आर्थिक प्रभाव

4.4 धार्मिक व सांस्कृतिक प्रभाव

- पंचम अध्याय : युद्ध की विभीषिका और मानवता का द्वंद्व

5.1 युद्ध की विभीषिका का वर्णन

5.2 युद्ध के दौरान मानवता का द्वंद्व

- षष्टम अध्याय : स्वातंत्र्योत्तर युद्ध आधारित हिंदी उपन्यासों की भाषा शैली

6.1 शब्द चयन

6.2 वाक्य विन्यास

6.3 अभिव्यक्ति शैली

- उपसंहार

- परिशिष्ट

1) आधार ग्रंथों की सूची
2) सहायक ग्रंथों की सूची
3) पत्र –पत्रिकाएँ
4) अन्य

12.परिशिष्ट

आधार ग्रन्थ सूची:

मुर्दों का टीला- रांगेय राघव ; राधाकृष्ण प्रकाशन 2019

बंदूक और बीन - रांगेय राघव

मशाल- भैरव प्रसाद गुप्त

आधा पुल - जगदीशचंद्र ; आधार प्रकाशन 2017

टुंडा लाट - जगदीशचंद्र

लाट की वापसी - जगदीशचंद्र ; राजकमल प्रकाशन 2000

कुहरे में युद्ध - शिवप्रसाद सिंह

असलाह - गिरिराज किशोर

अंतर्ध्वंस - गिरिराज किशोर

मंगल भवन - विवेकी राय

वे दिन - निर्मल वर्मा

अभ्युदय(4 खंड) - नरेंद्र कोहली ; वाणी प्रकाशन 2023

महासमर(8खंड) - नरेंद्र कोहली ; वाणी प्रकाशन 2013

धूप छांही रंग - गिरीश अस्थाना

मैं बोरिशाइल्ला - महुआ माजी ; राजकमल प्रकाशन 2019

आउशवित्ज:एक प्रेम कथा - गरिमा श्रीवास्तव ; 2023 वाणी प्रकाशन

खारकीव के खंडहर - अजय शर्मा

सहायक ग्रन्थ सूची:

हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपाल राय
हिंदी उपन्यास का विकास – मधुरेश
हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा – रामदरश मिश्र
द्वितीय महायुद्धोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
परंपरा, सर्जन और उपन्यास – विनोद तिवारी
हिंदी उपन्यास के विकास परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास – डॉ. पारूकांत देसाई
हिंदी उपन्यास समकालीन विमर्श – डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी
हिंदी कथा साहित्य का इतिहास –डॉ. हेतु भारद्वाज
हिंदी का गद्य साहित्य – डॉ. रामचंद्र तिवारी
उपन्यास : स्वरूप और संवेदना – राजेंद्र यादव
उपन्यास की संरचना – गोपाल राय
आधुनिक हिंदी उपन्यास – भीष्म साहनी
आधुनिक उपन्यास : विविध आयाम – डॉ विवेकी राय
आधुनिकता और हिंदी उपन्यास – इंद्रनाथ मदान
साहित्य का आधुनिक युग – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
आधुनिक साहित्य: सृजन और समीक्षा – आचार्य नंददुलारे वाजपेयी
साहित्य का मर्म– आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
हिंदी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेंद्र और लाला हरदयाल
साहित्य का समाजशास्त्र– डॉ. नगेंद्र
स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य - विश्वम्भरनाध शर्मा
उपन्यास और लोकतंत्र– मैनेजर पाण्डेय
उपन्यास का यथार्थ और रचनात्मक भाषा – परमानंद श्रीवास्तव
हिंदी साहित्य और संवेदना का का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी

हिंदी गद्यविन्यास और विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
युद्ध और शांति – लियो टॉलस्टाय

संदर्भित पत्र –पत्रिका एवं अखबार :

आलोचना

वागर्थ

आजकल

हंस

राँची एक्सप्रेस, प्रभात खबर, हिंदुस्तान, जनसत्ता

नोटः– इस शोध का प्रारूप अंतिम नहीं है भविष्य में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन किया जा सकता है।